

रविवार 19 अप्रैल, 2020

विषय — प्रायश्चित का सिद्धांत

स्वर्ण पाठ: 2 इतिहास 34 : 27

---

"इसलिये कि तू वे बातें सुन कर दीन हुआ, और परमेश्वर के साम्हने अपना सिर नवाया, और उसकी बातें सुन कर जो उसने इस स्थान और इस के निवासियों के विरुद्ध कहीं, तू ने मेरे साम्हने अपना सिर नवाया, और वस्त्र फाड़ कर मेरे साम्हने रोया है, इस कारण मैं ने तेरी सुनी है; यहोवा की यही वाणी है।"

---

उत्तरदायी अध्ययन:

अय्यूब 22 : 21-23, 25-29

- 21 उस से मेलमिलाप कर तब तुझे शान्ति मिलेगी; और इस से तेरी भलाई होगी।
- 22 उसके मुंह से शिक्षा सुन ले, और उसके वचन अपने मन में रख।
- 23 यदि तू सर्वशक्तिमान की ओर फिर के समीप जाए, और अपने डेरे से कुटिल काम दूर करे, तो तू बन जाएगा।
- 25 तब सर्वशक्तिमान आप तेरी अनमोल वस्तु और तेरे लिये चमकीली चान्दी होगा।
- 26 तब तू सर्वशक्तिमान से सुख पाएगा, और ईश्वर की ओर अपना मुंह बेखटके उठा सकेगा।
- 27 और तू उस से प्रार्थना करेगा, और वह तेरी सुनेगा; और तू अपनी मन्नतों को पूरी करेगा।
- 28 जो बात तू ठाने वह तुझ से बन भी पड़ेगी, और तेरे मार्गों पर प्रकाश रहेगा।
- 29 चाहे दुर्भाग्य हो तौभी तू कहेगा कि सुभाग्य होगा, क्योंकि वह नम्र मनुष्य को बचाता है।

## पाठ उपदेश

### बाइबल

#### 1. I इतिहास 28: 9 (जानना) (से;)

---

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 9 ...तू अपने पिता के परमेश्वर का ज्ञान रख, और खरे मन और प्रसन्न जीव से उसकी सेवा करता रह; क्योंकि यहोवा मन को जांचता और विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है उसे समझता है। यदि तू उसकी खोज में रहे, तो वह तुझ को मिलेगा; परन्तु यदि तू उसको त्याग दे तो वह सदा के लिये तुझ को छोड़ देगा।

## 2. भजन संहिता 63 : 1-3, 6, 7

- 1 हेपरमेश्वर, तू मेरा ईश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा; सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।
- 2 इस प्रकार से मैं ने पवित्रास्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूं।
- 3 क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है मैं तेरी प्रशंसा करूंगा।
- 6 जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूंगा, तब रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूंगा;
- 7 क्योंकि तू मेरा सहायक बना है, इसलिये मैं तेरे पंखों की छाया में जयजयकार करूंगा।

## 3. मीका 6 : 8 (और क्या)

- 8 ....और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?

## 4. भजन संहिता 10 : 4, 5 (से;), 6

- 4 दुष्ट अपने अभिमान के कारण कहता है कि वह लेखा नहीं लेने का; उसका पूरा विचार यही है कि को परमेश्वर है ही नहीं॥
- 5 वह अपने मार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है।
- 6 वह अपने मन में कहता है कि मैं कभी टलने का नहीं: मैं पीढ़ी से पीढ़ी तक दुःख से बचा रहूंगा॥

## 5. भजन संहिता 50 : 22 (से 2nd ,)

- 22 हे ईश्वर को भूलने वालों यह बात भली भांति समझ लो!

## 6. याकूब 4 : 1-4, 6-8, 10

- 1 तुम में लड़ाइयां और झगड़े कहां से आ गए? क्या उन सुख-विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगों में लड़ते-भिड़ते हैं?

- 2 तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं; तुम हत्या और डाह करते हो, ओर कुछ प्राप्त नहीं कर सकते; तुम झगड़ते और लड़ते हो; तुम्हें इसलिये नहीं मिलता, कि मांगते नहीं।
- 3 तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिये कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपने भोग विलास में उड़ा दो।
- 4 हे व्यभिचारियों, क्या तुम नहीं जानतीं, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।
- 6 वह तो और भी अनुग्रह देता है; इस कारण यह लिखा है, कि परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।
- 7 इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।
- 8 परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा: हे पापियों, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगों अपने हृदय को पवित्र करो।
- 10 प्रभु के साम्हने दीन बनो, तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा।

## 7. मरकुस 1 : 1

- 1 परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ।

## 8. मत्ती 5 : 1-3, 5, 6

- 1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।
- 2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,
- 3 धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
- 5 धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
- 6 धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।

## 9. लूका 18 : 9-27

- 9 और उस ने कितनो से जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और औरों को तुच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त कहा।
- 10 कि दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेने वाला।
- 11 फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनुष्यों की नाई अन्धे करने वाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेने वाले के समान हूं।
- 12 मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं।

- 13 परन्तु चुंगी लेने वाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा, वरन अपनी छाती पीट-पीटकर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर।
- 14 मैं तुम से कहता हूं, कि वह दूसरा नहीं; परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा॥
- 15 फिर लोग अपने बच्चों को भी उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे; और चेलों ने देख कर उन्हें डांटा।
- 16 यीशु ने बच्चों को पास बुलाकर कहा, बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो: क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।
- 17 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करेगा वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा॥
- 18 किसी सरदार ने उस से पूछा, हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं?
- 19 यीशु ने उस से कहा; तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक, अर्थात् परमेश्वर।
- 20 तू आज्ञाओं को तो जानता है, कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना, और चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।
- 21 उस ने कहा, मैं तो इन सब को लड़कपन ही से मानता आया हूं।
- 22 यह सुन, यीशु ने उस से कहा, तुझ में अब भी एक बात की घटी है, अपना सब कुछ बेच कर कंगालों को बांट दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।
- 23 वह यह सुनकर बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा धनी था।
- 24 यीशु ने उसे देख कर कहा; धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है?
- 25 परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।
- 26 और सुनने वालों ने कहा, तो फिर किस का उद्धार हो सकता है?
- 27 उस ने कहा; जो मनुष्य से नहीं हो सकता, वह परमेश्वर से हो सकता है।

## 10. यूहन्ना 10 : 23-30

- 23 और यीशु मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहा था।
- 24 तब यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा, तू हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है, तो हम से साफ कह दे।
- 25 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं ने तुम से कह दिया, और तुम प्रतीति करते ही नहीं, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे गवाह हैं।
- 26 परन्तु तुम इसलिये प्रतीति नहीं करते, कि मेरी भेड़ों में से नहीं हो।
- 27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।

- 28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।  
29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।  
30 मैं और पिता एक हैं।

## 11. यूहन्ना 14 : 10 (पिता जो)

- 10 .... पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।

## 12. यूहन्ना 8 : 29

- 29 और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ, जिस से वह प्रसन्न होता है।

## विज्ञान और स्वास्थ्य

### 1. 316 : 20-23

मसीह अविनाशी आदमी को प्रस्तुत करता है, जिसे आत्मा बनाता है, गठित करता है, और शासित करता है। मसीह भगवान और उसके दिव्य सिद्धांत के साथ सम्मिश्रण दिखाता है, जो मनुष्य को सारी पृथ्वी पर प्रभुत्व प्रदान करता है।

### 2. 70 : 7-9

मनुष्य कभी ईश्वर नहीं है, लेकिन ईश्वर की समानता में बना आध्यात्मिक मनुष्य, ईश्वर को दर्शाता है। इस वैज्ञानिक प्रतिबिम्ब में अहंकार और पिता अविभाज्य हैं।

### 3. 588 : 9-19

मैं, या अहंकार। दिव्य सिद्धांत; आत्मा; अन्तः मन; शारीरिक, अचूक, अमर और शाश्वत मन।

वहाँ एक है, लेकिन मैं हूँ, या हम हैं, लेकिन एक दिव्य सिद्धांत, या मन, सभी अस्तित्व को नियंत्रित करता है; आदमी और औरत अपने व्यक्तिगत चरित्रों में हमेशा के लिए अपरिवर्तित रहते हैं, यहाँ तक कि वे संख्याएँ जो कभी एक दूसरे के साथ नहीं मिलतीं, हालांकि वे एक सिद्धांत द्वारा शासित होती हैं। ईश्वर की सृष्टि की सभी

वस्तुएँ एक मन को दर्शाती हैं, और जो कुछ भी इस एक मन को नहीं दर्शाता है, वह मिथ्या और गलत है, यहाँ तक कि यह विश्वास भी कि जीवन, पदार्थ और बुद्धि दोनों मानसिक और भौतिक हैं।

#### **4. 281 : 14-17**

एक अहंकार, एक मन या आत्मा जिसे भगवान कहा जाता है, अनंत व्यक्तित्व है, जो सभी प्रकार और शांति प्रदान करता है और जो व्यक्तिगत आध्यात्मिक व्यक्ति और चीजों में वास्तविकता और दिव्यता को दर्शाता है।

#### **5. 250 : 6-13**

नश्वर अस्तित्व एक सपना है; नश्वर अस्तित्व की कोई वास्तविक इकाई नहीं है, लेकिन सैथ "यह मैं है।" आत्मा वह अहंकार है जो कभी सपने नहीं देखता, लेकिन सभी चीजों को समझता है; जो कभी ग़लती नहीं करता, और जो हमेशा सचेत रहता है; जो कभी विश्वास नहीं करता, लेकिन जानता है; जो न कभी पैदा होता है और न कभी मरता है। आध्यात्मिक मनुष्य इस अहंकार की समानता है। मनुष्य ईश्वर नहीं है, लेकिन प्रकाश की एक किरण की तरह, जो सूर्य से आती है, मनुष्य, ईश्वर का परिणाम, ईश्वर को दर्शाता है। मनुष्य ईश्वर नहीं है, लेकिन प्रकाश की एक किरण की तरह, जो सूर्य से आती है, मनुष्य, ईश्वर का परिणाम, ईश्वर को दर्शाता है।

#### **6. 361 : 16-20**

जैसे पानी की एक बूंद सागर के साथ है, सूर्य के साथ प्रकाश की एक किरण, यहाँ तक कि भगवान और मनुष्य, पिता और पुत्र, अस्तित्व में एक हैं। शास्त्र कहता है: "क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं।"

#### **7. 42 : 19-21**

यह विश्वास कि मनुष्य का अस्तित्व या मन ईश्वर से अलग है, एक त्रुटि है। यीशु ने दिव्य विज्ञान के साथ इस त्रुटि का सामना किया और अपने गैर-अस्तित्व को साबित किया।

#### **8. 315 : 3-16**

हमारे मास्टर के उस कहने ने उन्हें रब्बी के विद्वान धर्मशास्त्र से अलग कर दिया कि "मैं और मेरे पिता एक हैं"। भगवान के बारे में उनकी बेहतर समझ उनके लिए एक प्रतिघात थी। एक मन का जानता था और किसी अन्य के लिए कोई दावा नहीं करता था। वह जानता था कि शरीर के बदले अहंकार मन था और वह पदार्थ, पाप और बुराई मन नहीं थे; और इस दिव्य विज्ञान के बारे में उनकी समझ ने उन्हें उम्र का आधार बना दिया।

लोगों के विपरीत और झूठे विचारों ने उनकी भावना से, परमेश्वर के साथ मसीह के पुत्रत्व को छिपा दिया वे उसके आध्यात्मिक अस्तित्व को समझ नहीं पाए। उनके कार्तिक मन इसके शत्रु थे। उनके विचारों को नश्वर त्रुटि के साथ भरा गया था, बजाय भगवान के आध्यात्मिक विचार के साथ जो मसीह यीशु द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

## 9. 270 : 22-24

पुरोहिती का गौरव इस दुनिया का राजकुमार है। यह मसीह में कुछ भी नहीं है। मधुरता और दान में ईश्वरीय अधिकार है।

## 10. 228 : 27-32

है विनम्र नाज़रीन ने इस पाप को दूर कर दिया कि पाप, बीमारी और मृत्यु में शक्ति है। उन्होंने उन्हें शक्तिहीन साबित कर दिया। यह याजकों के गौरव को नम्र करना चाहिए, जब उन्होंने ईसाई धर्म के प्रदर्शन को उनके मृत विश्वास और समारोहों के प्रभाव में देखा।

## 11. 448 : 2-5

अंधता और स्वधर्म अधर्म में तेजी से जकड़े रहते हैं। जब शिली लेने वाले का रोना बड़े प्यार के दिल में उतर गया, तो इसने उसकी विनम्र इच्छा को जीत लिया।

## 12. 18 : 3-12

नासरत के यीशु ने पिता के साथ मनुष्य की एकता को सिखाया और प्रदर्शित किया, और इसके लिए हम उसे अंतहीन श्रद्धांजलि देते हैं। उनका मिशन व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों था। उन्होंने जीवन का काम न केवल स्वयं के प्रति न्याय में, बल्कि मनुष्यों पर दया करने में भी किया। यीशु ने निर्भिकता से, इंद्रियों के मान्यता प्राप्त सबूतों के खिलाफ, फरिसासिक पंथों और प्रथाओं के खिलाफ काम किया, और उन्होंने अपनी उपचार शक्ति के साथ सभी विरोधियों का खंडन किया।

## 13. 19 : 17-24

पश्चाताप और पीड़ा के हर दर्द, सुधार के लिए हर प्रयास, हर अच्छा विचार और काम, हमें पाप के लिए यीशु के प्रायश्चित्त को समझने और उसकी प्रभावकारिता की सहायता करने में मदद करेगा; लेकिन अगर पापी प्रार्थना और पश्चाताप करना, पाप करना और क्षमा करना जारी रखता है, तो उसके पास प्रायश्चित्त में बहुत कम हिस्सा है, — परमेश्वर के साथ एकता में, - क्योंकि उसके पास व्यावहारिक पश्चाताप का अभाव है, जो हृदय को सुधारता है और मनुष्य को ज्ञान की इच्छा करने में सक्षम बनाता है।

## 14. 25 : 26-32

शिक्षक के प्रति विश्वास और सभी भावनात्मक प्रेम हम उस पर पूरा कर सकते हैं, कभी भी हमें उसका अनुकरण करने वाला नहीं बनाएंगे। हमें इसी तरह से जाना चाहिए और करना चाहिए, अन्यथा हम उन महान आशीषों में सुधार नहीं कर रहे हैं जो हमारे मास्टर ने काम किया था और हमारे लिए सबसे अच्छा था। मसीह की दिव्यता को यीशु की मानवता में प्रकट किया गया था।

## 15. 22 : 3-22

पाप और क्षमा, स्वार्थ और कामुकता की आशा के बीच एक पेंडुलम की तरह कंपन, निरंतर प्रतिगमन का कारण बनता है, — हमारी नैतिक प्रगति धीमी होगी। मसीह की माँग के प्रति जागते हुए, नश्वर दुख का अनुभव करते हैं। यह उनके कारण होता है, यहां तक कि डूबने वाले पुरुषों के रूप में, खुद को बचाने के लिए जोरदार प्रयास करना; और मसीह के अनमोल प्रेम के माध्यम से इन प्रयासों को सफलता मिली।

"अपने स्वयं के उद्धार का काम करें," यह जीवन और प्रेम की मांग है, इस अंत के लिए भगवान आपके साथ काम करते हैं। "जब तक मैं न आऊं तब तक दृढ़ रहना!" अपने इनाम की प्रतीक्षा करें, और "अच्छा करने में थके नहीं। यदि आपके प्रयास भयभीत बाधाओं से घिरे हुए हैं, और आपको कोई वर्तमान इनाम नहीं मिलता है, तो गलती पर वापस न जाएं, और न ही दौड़ में सुस्त बनें।

जब लड़ाई का धुआं दूर हो जाएगा, तो आप अपने द्वारा किए गए अच्छे को समझेंगे, और अपने योग्य के अनुसार प्राप्त करेंगे। प्रेम हमें प्रलोभन देने के लिए जल्दी में नहीं है, क्योंकि प्रेम का अर्थ है कि हमें कोशिश और शुद्ध करना होगा।

## 16. 21 : 1-5, 9-14

यदि सत्य आपके दैनिक चलने और वार्तालाप में त्रुटि पर काबू पा रहा है, तो आप अंततः कह सकते हैं, "मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ .... मैं ने विश्वास की रखवाली की है।" क्योंकि आप एक बेहतर इंसान हैं। यह सत्य और प्रेम के साथ एक-में-भाग में हमारा हिस्सा है।

यदि शिष्य आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ रहा है, तो वह अंदर प्रवेश करने का प्रयास कर रहा है। वह भौतिक दृष्टि से लगातार दूर होता जाता है, और आत्मा की अपूर्ण चीजों की ओर देखता है यदि वह ईमानदार है, तो वह शुरू से ही सबसे अधिक लाभ में रहेगा, और जब तक वह खुशी के साथ अपना कोर्स पूरा नहीं कर लेता, तब तक वह हर दिन सही दिशा में थोड़ा-थोड़ा हासिल करेगा।



## दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

## दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

## उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

## कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6

